पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VII
Hindi
Specimen copy
Year- 2022-23
Month-April-June

अनुक्रमणिका

क्रम नंबर	महिना	पाठ / कविता का नाम
1	अप्रैल – मई	➢ **कविता -1= हम पंछी उन्मुक्त गगन के** ➢ व्याकरण = भाषा ,लिपि ,व्याकरण ➢ लेखन -विभाग = निबंध ➢ **पाठ -2 दादी माँ** ➢ व्याकरण = संधि ➢ लेखन -विभाग =संवाद लेखन ➢ बाल महाभारत = पाठ -1,2
2	जून	➢ **पाठ -3 = हिमालय की बेटियाँ** ➢ व्याकरण = उपसर्ग ,प्रत्यय ➢ लेखन = अनुच्छेद ➢ **कविता -4= कठपुतली** ➢ व्याकरण = काल ➢ लेखन = पत्र लेखन

कविता-1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के

(कवि - शिवमंगल सिंह सुमन)

➢ **कविता का सारांश-** कवि शिवमंगल सिंह सुमन ने हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता में पक्षियों के जरिये स्वतंत्रता के महत्व का वर्णन किया है। कविता में पक्षी कहते हैं कि हम खुले आसमान में घूमने वाले प्राणी हैं, हमें पिंजरे में बंद कर देने पर हम अपने सुरीले गीत नहीं गा पाएंगे। हमें सोने के पिंजरे में भी मत रखना, क्योंकि हमारे पँख पिंजरे से टकराकर टूट जाएंगे और हमारा जीवन ख़राब हो जाएगा। हम स्वतंत्र होकर नदी-झरनों का जल पीते हैं, पिंजरे में हम भला क्या खा-पी पाएंगे। हमें गुलामी में सोने के कटोरे में मिले मैदे से ज्यादा, स्वतंत्र होकर कड़वी निबौरी खाना पसंद है। आगे कविता में पंछी कहते हैं कि पिंजरे में बंद होकर तो पेड़ों की ऊँची टहनियों पर झूला झूलना अब एक सपना मात्र बन गया है। हम आकाश में उड़कर इसकी हदों तक पहुंचना चाहते थे। हमें आकाश में ही जीना- मरना है। अंत में पक्षी कहते हैं कि तुम चाहे हमारे घोंसले और आश्रय उजाड़ दो। मगर, हमसे उड़ने की आज़ादी मत छीनो, यही तो हमारा जीवन है।

➢ नए शब्द

1) उन्मुक्त
2) पिंजराबद्ध
3) कनक
4) श्रंखला
5) पुलकित
6) क्षितिज
7) फुगनी
8) नीड़

➢ शब्दार्थ

1) उन्मुक्त = आजाद
2) पिंजराबद्ध = पिंजरे में कैद
3) कनक = स्वर्ण
4) पुलकित = खुशी से झुमना
5) निबोरी = नीम का फल
6) स्वर्ण श्रंखला = सोने की तीलियाँ
7) फुगनी = पेड़ की सबसे ऊंची डाली
8) क्षितिज = जहाँ धरती आसमान मिलते हो
9) नीड़ = घोसला
10) आश्रय = रहने का ठिकाना
11) विघ्न = बाधा

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

1) पक्षी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?

(a) नल का जल
(b) वर्षा का जल
(c) नदी-झरनों का जल
(d) पिंजरे में रखी कटोरी का जल

2) बंधन किसका है?

(a) स्वर्ण का
(b) श्रृंखला का
(c) स्वर्ण श्रृंखला का
(d) मनुष्य का

3) लंबी उड़ान में क्या-क्या संभावनाएँ हो सकती थीं?

(a) क्षितिज की सीमा मिल जाती

(b) साँसों की डोरी तन जाती

(c) ये दोनों बातें हो सकती थीं

(d) कुछ नहीं होता

4) पक्षी क्यों व्यथित हैं?

(a) क्योंकि वे बंधन में हैं

(b) क्योंकि वे आसमान की ऊँचाइयाँ छूने में असमर्थ हैं

(c) क्योंकि वे अनार के दानों रूपी तारों को चुगने में असमर्थ हैं

(d) उपर्युक्त सभी

5) पिंजरे में रहकर पक्षी क्या नहीं कर पाएंगे?

(a) गा नहीं पाएँगे (b) उड़ नहीं पाएंगे

(c) कुछ खा नहीं पाएँगे (d) उपर्युक्त सभी

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पंछी अपना मधुर गीत कब नहीं गए पाएँगें?

उत्तर- पंछी अपना मधुर गीत पिंजरे में बंद होकर नहीं गए पाएँगें।

प्रश्न-2 पंछी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?

उत्तर - पंछी नदी और झरनों का बहता जल पीना पसंद करते हैं।

प्रश्न-3 पंछियों के लिए पिंजरे में रखे मैदा से बेहतर क्या है?

उत्तर - पंछियों के लिए पिंजरे में रखे मैदा से बेहतर नीम का फल है।

प्रश्न-4 पंछियों के अरमान क्या थे?

उत्तर - पंछियों के आकाश की सीमा तक उड़ने के अरमान थे।

प्रश्न-5 पंछी कैसा जीवन चाहते हैं?

उत्तर - पंछी एक स्वतंत्र जीवन चाहते हैं।

प्रश्न-6 पंछी क्या खाते पीते हैं?

उत्तर - पंछी बहता हुआ जल पीते हैं और पेड़ पे लगे हुए फल खाते हैं।

प्रश्न-7 पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों की क्या दशा होगी?

उत्तर - पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों के पंख पिंजरे के सलाखों से टकराकर टूट जायेंगें।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पिंजरे में पंछी क्या-क्या नहीं कर सकते?

उत्तर - पिंजरे में पंछी पंख नहीं फैला सकते, ऊँची उड़ान नहीं भर सकते, बहता जल नहीं पी सकते और पेड़ों पर लगे हुए फल नहीं खा सकते।

प्रश्न-2 कविता में पंछी क्या याचना कर रहें हैं?

उत्तर - कविता में पंछी याचना कर रहे हैं कि चाहे उनके घोंसलें तोड़ दें या चाहे उनके टहनी के आश्रय छिन्न भिन्न कर दें पर जब उन्हें पंख दिए हैं तो उनके उड़ान में विघ्न न डालें।

प्रश्न-3 इस कविता के माध्यम से पंछी क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर - इस कविता के माध्यम से पंछी यह संदेश देना चाहते हैं कि स्वंतत्रता सब को प्रिय होती है और स्वंतत्र रह कर ही हम अपने सभी इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं।

प्रश्न-4 हर तरह की सुख सुवधाएं पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?

उत्तर - हर तरह की सुख सुवधाएं पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद इसलिए नहीं रहना चाहते क्योंकि उन्हें स्वतंत्रता पसंद हैं, वह बंधन में नहीं रहना चाहते। वह खुल कर आकाश में

उड़ना चाहते हैं।

प्रश्न-5 पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन - कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते थे?

उत्तर - पक्षी उन्मुक्त रहकर बहता हुआ शीतल जल पीना, कड़वे निबौरी के फल खाना, पेड़ की सबसे ऊंची टहनी पर झुलना, खुले आसमान में उड़ना तथा क्षितिज के अंत तक उड़ने की इच्छाएँ पूरी करना चाहते थे ।

➢ **भाव स्पष्ट कीजिए -**

"या तो क्षितिज मिलन बन जाता / या तनती साँसो की डोरी

उत्तर - इन पंक्ति में पंछी क्षितिज की सीमा तक उड़ जाने की या अपने प्राण त्याग देने की इच्छा रखते हैं।

व्याकरण

भाषा , लिपि और व्याकरण

➢ **भाषा** - भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों को आदान – प्रदान करता है।

➢ **भाषा के रूप**

भाषा के दो रूप हैं-

1) **मौखिक भाषा** – जब व्यक्ति अपने मन के भावों को बोलकर व्यक्त करता है, तो वह भाषा का मौखिक रूप कहलाता है।

2) **लिखित भाषा** – जब व्यक्ति अपने मन के भावों को लिखकर व्यक्त करता है, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है।

➢ **लिपि** – भाषा का प्रयोग करते समय हम सार्थक ध्वनियों का उपयोग करते हैं। इन्हीं मौखिक ध्वनियों को जिन चिह्नों द्वारा लिखकर व्यक्त किया जाता है, वे लिपि कहलाते हैं।

भाषा	लिपि
हिंदी, संस्कृत, मराठी	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू, फ़ारसी	फ़ारसी
अरबी	अरबी
बंगला	बंगला
रूसी	रूसी
अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश	रोमन

संस्कृत भाषा से ही हिंदी भाषा का जन्म हुआ है। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी संविधान में भारत की राजभाषा स्वीकार की गई।

- **व्याकरण** – व्याकरण शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है: वि+आ+करण जिसका अर्थ होता है: भली भाँति समझाना।
  भाषा को शुद्ध रूप में लिखना, पढ़ना और बोलना सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

लेखन विभाग

निबंध

- **समय का सदुपयोग**

संकेत-बिंदु –

- प्रस्तावना
- समय का अधिकाधिक उपयोग
- प्रकृति से सीख
- समय नियोजन का महत्त्व
- आलस्य समय के सदुपयोग में बाधक
- उपसंहार

प्रस्तावना - मनुष्य अपने जीवन में बहुत कुछ कमाता है और बहुत गँवाता है। उसे प्रत्येक वस्तु परिश्रम के उपरांत प्राप्त होती है, परंतु प्रकृति ने उसे समय का अमूल्य उपहार मुफ़्त दिया है। इस उपहार की अवहेलना करके उसकी महत्ता न समझने वालों को एक दिन पछताना पड़ता है क्योंकि गया समय लौटकर वापस नहीं आता है। जो समय बीत गया उसे किसी हाल में लौटाया नहीं जा सकता है।

समय नियोजन का महत्त्व - समय ऐसी शक्ति है जिसका वितरण सभी के लिए समान रूप से किया गया है, परंतु उसका लाभ वही उठा पाते हैं जो समय का उचित नियोजन करते हैं। प्रकृति ने किसी के लिए भी छोटे दिन नहीं बनाया है परंतु नियोजनबद्ध तरीके से काम करने वाले हर काम के लिए पूरा समय बचा लेते हैं और अनियोजित तरीके से काम करने वालों का काम समय पर पूरा न होने से समय की कमी का रोना रोते हैं। समय का

नियोजन न करने वालों को समय पीछे ढकेल देता है और समय का सदुपयोग करने वाले सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।

- महापुरुषों की सफलता का रहस्य उनके द्वारा समय का नियोजन ही है जिससे वे समय पर अपने काम निपटा लेते हैं। गांधी जी समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करते थे। वे अपनी दिनचर्या के अनुरूप रोज़ का काम रोज़ निपटाने के लिए तालमेल बिठा लेते थे। विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग और उसके नियोजन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इसी काल में उसे विद्यार्जन के अलावा शारीरिक और चारित्रिक विकास पर भी ध्यान देना होता है।

समय का अधिकाधिक उपयोग - समय का महत्त्व और मूल्य समझकर हमें इसका अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। वे अपने समयानुसार आते-जाते रहते हैं। यह तो व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वे उनका उपयोग करते हैं या सदुपयोग। समय के बारे में एक बात सत्य है कि समय किसी की भी परवाह नहीं करता। यह किसी शासक, राजा या तानाशाह के रोके नहीं रुका है। जिन लोगों ने समय को नष्ट किया है, समय उनसे बदला लेकर एक दिन उन्हें अवश्य नष्ट कर देता है।

इस क्षणभंगुर मानव जीवन में काम अधिक और समय बहुत कम है। समय के एक-एक पल की कीमत समझते हुए संत कबीर दास ने ठीक ही लिखा है -

- काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
  पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब॥

आलस्य समय के सदुपयोग में बाधक - कुछ लोग समय का उपयोग तो करना चाहते हैं, परंतु आलस्य उनके मार्ग में बाधक बन जाता है। यह मनुष्य को समय पर काम करने से रोकता है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। जो लोग बुद्धिमान होते हैं वे खाली समय का उपयोग अच्छी पुस्तकें पढ़ने में करते हैं इसके विपरीत मूर्ख अपने समय का उपयोग सोने और झगड़ने में करते हैं।

उपसंहार - प्रकृति ने समय का बँटवारा सभी के लिए बराबर किया है। हमें चाहिए कि हम इसी समय का उचित नियोजन करें और प्रत्येक कार्य को समय पर निपटाने का प्रयास करें। आज का कार्य कल पर छोड़ने की आदत आलस्य को बढ़ावा देती है। हमें समय का उपयोग करते हुए सफलता अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए।

➢ **गतिविधि** - आजाद पक्षियों का चित्र बनाए |

पाठ -2 दादी माँ

(लेखक - शिवप्रसाद सिंह)

➢ दादी माँ पाठ का सार

दादी के स्वर्गवास का पत्र पढकर लेखक हैरान रह गया और दादी माँ के जीवन से जुड़ी घटनाएँ चलचित्र की भांति उसकी आँखों के सामने आने लगीं। गाँव का दृश्य. अचानक ही लेखक के सामने साकार हो उठा। आश्विन के दिन गांव के चारों ओर पानी ही पानी का हिलोरें लेना, दूर के नाले से बहकर अनेक प्रकार की सड़ी-गली घासों व नाना प्रकार के बीजों

का बहकर आना, पानी का बदबू मारना गाँव के तालाबों में लड़कों का धमाक से कूदना, याद आने लगा। गाँव में इन गंध भरे जलाशयों में नहाने की मुख्य चाह सभी में विद्यमान रहती

थी। लेकिन लेखक को बचपन की वह घटना भी नहीं भूलती कि एक बार उसे ज्वर था तो वह इस तालाब में नहाने का आनंद न ले सका उसे बहुत दुख हुआ था |वैसे तो यह माना जाता था कि दादी माँ कोई काम नहीं करतीं लेकिन घर का व बाहर का सभी कार्य दादी माँ के बिना अधूरा रहता था। छोटे-बड़े कामों में दादी की उपस्थिति व सलाह अनिवार्य थी। गीली

साड़ी में ही 'दीया' जलाकर पूजा करना दर्शाता है कि वे धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। दादी माँ की मृत्यु का पत्र पढ़ते ही लेखक के सामने दादी का चित्र सजीव हो उठा था। वह उनकी याद में

एकदम उदास हो गया।

➢ नए शब्द

1) अनमना
2) धुंधली
3) सिवान
4) ज्वर
5) लवंग
6) तिताई
7) विहल
8) वात्याचक्र
9) सहेजना
10) धूमिल

➢ शब्दार्थ

1) अनमना = उदास
2) धुंधली = अस्पष्ट
3) सिवान = गाँव के सीमा की जमीन
4) लाई = खील
5) ज्वर = बुखार
6) विसूचिका = हैजा
7) लवंग = लौंग
8) तिताई = तीखापन
9) निस्तार = उद्धार
10) चारा = उपाय
11) विहल = बहुत प्रसन्न
12) धूमिल = धुए जैसा

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) लेखक की कमज़ोरी क्या थी?

(a) घर न जाने की
(b) घर में लड़ाई-झगड़े करने की
(c) घर की याद सताने की
(d) घर पर सोते रहने की

2) दादी माँ का व्यक्तित्व कैसा था?

(a) स्नेह और ममता भरा (b) क्रोधपूर्ण

(c) झगड़ालु (d) चिढ़चिढ़ा

3) दादी माँ क्यों उदास रहती थी?

(a) पड़ोसियों से झगड़ा होने के कारण

(b) अपने पुत्र द्वारा अपमानित करने के कारण

(c) दादा जी की मृत्यु हो जाने के कारण

(d) पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण

4) पाठ में बच्चे किस महीने में झागदार पानी में नहाते थे?

(a) आषाढ़ (b) माघ

(c) क्वार (d) भादो

5) विवाह से चार-पाँच दिन पहले औरतें क्या करती थीं?

(a) भजन (b) भोजन

(c) अभिनय **(d) रात भर गीत गाती थी**

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 गाँव के लड़के झागभरे जलाशयों में किस महीने में खेलतें हैं?

उत्तर- गाँव के लड़के झागभरे जलाशयों में क्वार के महीने में खेलतें हैं।

प्रश्न-2 दादी माँ ज्वर का अनुमान कैसे लगाती थीं?

उत्तर - दादी माँ छू-छूकर ज्वर का अनुमान लगाती थीं।

प्रश्न-3 दादी माँ कौन से जल से नहाकर आई थीं?

उत्तर - दादी माँ जलाशय के झागभरे जल से नहाकर आई थीं।

प्रश्न-4 दादी माँ बीमार लेखक के लिए क्या ले कर आई थीं?

उत्तर - दादी माँ बीमार लेखक के लिए अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी लाई थीं।

प्रश्न-5 बरबस लेखक की आँखों के सामने किसी की धुँधली छाया नाच उठती है?

उत्तर - बरबस लेखक की आँखों के सामने दादी माँ की धुँधली छाया नाच उठती है।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 दादी माँ का व्यवहार कैसा था?

उत्तर - दादी माँ बाहर से कठोर और अंदर से कोमल स्वभाव की थीं। वे स्नेह, ममता, और त्याग की मूर्ति थीं। वह हमेशा दूसरों की मदद करती थीं।

प्रश्न-2 दादी माँ को बिमारियों के उपचार के संबंध में क्या जानकारी थी?

उत्तर - दादी माँ को गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। भूत से लेकर

मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान वह विश्वास के साथ सुनाती थी। महामारी और विशूचिका के दिनों में वह साफ़ सफाई का खास ध्यान रखती थी।

प्रश्न-3 दादी माँ के लिए दादा जी द्वारा दिए कंगन का क्या महत्व था?

उत्तर - दादी माँ को वह कंगन दादा जी ने पहनाए थे और उनकी भावनाएँ उस कंगन से जुडी हुई थी। वह कंगन उनके वंश की निशानी थी इसलिए वह उसे सहेजकर रखती आई थीं।

प्रश्न-4 लेखक को चादर में बड़ी हँसी आ रही थी परन्तु वो हँसना क्यों नहीं चाहता था?

उत्तर- लेखक को चादर में बड़ी हँसी आ रही थी परन्तु वो हँसना इसलिए नहीं चाहता था क्योंकि अगर वह ज़ोर से हँसा तो शोर से कहीं उसका भेद न खुल जाए और वो बाहर निकाला जाए। परन्तु भाभी की बात पर लेखक की हँसी रुक न सकी और उसका भंडाफोड़ हो गया।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 देबू की माँ ने लेखक के साथ हाथापाई क्यों शुरू कर दी?

उत्तर - विवाह की रात को औरतें अभिनय करती हैं । यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते है। लेखक पास ही में एक चारपाई पर चादर ओढ़कर लेटा हुआ था। भाभी की बात पर उसकी हँसी रुक न सकी और उसका भंडाफोड़ हो गया। देबू की माँ ने चादर खींच ली और उसे भगाने के लिए हाथापाई शुरू कर दी।

प्रश्न-2 दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर - दादी माँ स्नेह और ममता की मूर्ति थी। मुझे उनके स्वभाव का सबसे अच्छा पक्ष - दूसरों की मदद करना लगता है। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास वह पहुँच जाती

और उनका हाल चाल पूंछती । उन्होंने धन्नो का कर्ज माफ़ करके और उसे पैसे दिए जिससे वह अपनी बेटी की सादी अच्छे से कर सके। उन्होंने लेखक के पिताजी की भी अपने सोने के कंगन देकर मदद की।

प्रश्न-3 लेखक बचपन और अब की बीमारी में क्या अंतर महसूस करता है?

उत्तर - बचपन में जब लेखक बीमार पड़ता तो दादी माँ बड़े स्नेह से उसका देख भाल करतीं। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हूए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं, बीमार वाला खाना बनवाती और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। आज जब लेखक बीमार पड़ता है तो नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर दादी की स्नेहपूर्ण देखभाल नही मिलती इसलिए लेखक को अब ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता।

➢ व्याकरण

* संधि की परिभाषा

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

दूसरे अर्थ में- संधि का सामान्य अर्थ है मेल। इसमें दो अक्षर मिलने से तीसरे शब्द की रचना होती है, इसी को संधि कहते है।

संधि का शाब्दिक अर्थ है- मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

संधि विच्छेद- उन पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है।

जैसे- हिम + आलय= हिमालय (यह संधि है),

अत्यधिक= अति + अधिक (यह संधि विच्छेद है)

- यथा + उचित= यथोचित
- अखि + ईश्वर= अखिलेश्वर
- आत्मा + उत्सर्ग= आत्मोत्सर्ग
- महा + ऋषि= महर्षि

1- राष्ट्राध्यक्ष - राष्ट्र + अध्यक्ष

2- नयनाभिराम - नयन + अभिराम

3- युगान्तर - युग + अन्तर

4- शरणार्थी - शरण + अर्थी

5- सत्यार्थी - सत्य + अर्थी

6- दिवसावसान - दिवस + अवसान

7- प्रसंगानुकूल - प्रसंग +अनुकूल

8- विद्यानुराग - विद्या + अनुराग

9- परमावश्यक - परम + आवश्यक

10- उदयाचल - उदय + अचल

➢ लेखन विभाग

संवाद लेखन

अपने-अपने जीवन लक्ष्य के बारे में दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

रंजन - मित्र चंदन! बारहवीं के बाद तुमने क्या सोचा है?

चंदन - मित्र रंजन! मैंने तो अपना लक्ष्य पहले से ही तय कर रखा है। मैंने डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई भी शुरू कर दिया

रंजन - डॉक्टर ही क्यों?

चंदन - मैं डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करना चाहता हूँ।

रंजन - पर सेवा करने के तो और भी तरीके हैं ?

चंदन - पर मुझे यही तरीका पसंद है। डॉक्टर ही रोते-तड़पते मरीज के चेहरे पर मुसकान लौटाकर वापस भेजते हैं।

रंजन - पर कुछ डॉक्टर का भगवान का दूसरा रूप नहीं कहा जा सकता है?

चंदन - पर मैं सच्चा डॉक्टर बनकर दिखाऊँगा पर तुमने क्या सोचा है, अपने जीवनलक्ष्य के बारे में?

रंजन - पर इतनी मेहनत तो अपने वश की नहीं। सुना है-डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए बड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है जो मेरे वश की नहीं।

चंदन - पर बिना मेहनत सफलता कैसे पाओगे? रंजन-मैं नेता बनकर देश सेवा करना चाहता हूँ।

चंदन - तूने ठीक सोचा है। हल्दी लगे न फिटकरी, रंग बने चोखा।

रंजन - नेता बनना भी आसान नहीं है। तुम्हारे लक्ष्य के लिए शुभकामनाएँ।

➢ **गतिविधि** - अपनी दादी माँ के बारे में दस - पंद्रह वाक्य लिखिए |

बाल महाभारत

पाठ -1, 2

प्रश्न-1 महाभारत की कथा किसकी देन है?

उत्तर- महाभारत की कथा महर्षि पराशर के कीर्तिमान पुत्र वेद व्यास की देन है ।

प्रश्न-2 व्यास जी ने महाभारत की कथा सबसे पहले किसे कंठस्थ कराई थी?

उत्तर- व्यास जी ने महाभारत की कथा सबसे पहले अपने पुत्र शुकदेव को कंठस्थ कराई थी और बाद में अपने दूसरे शिष्यों को ।

प्रश्न- मानव जाति में महाभारत की कथा का प्रसार किसके द्वारा हुआ?

उत्तर - मानव जाति में महाभारत की कथा का प्रसार महर्षि वैशंपायन के द्वारा हुआ ।

प्रश्न-4 महर्षि वैशंपायन कौन थे?

उत्तर - महर्षि वैशंपायन व्यास जी के प्रमुख शिष्य थे ।

प्रश्न-5 किसके यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे?

उत्तर - महाराजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय के यज्ञ में सूत जी भी मौजूद थे ।

प्रश्न-6 सूत जी के द्वारा बुलाई गयी सभा के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - सूत जी के द्वारा बुलाई गयी सभा के अध्यक्ष महर्षि शौनक थे ।

प्रश्न-7 महाराजा शांतनु के बाद किसको हस्तिनापुर की गद्दी मिली?

उत्तर - महाराजा शांतनु के बाद उनके पुत्र चित्रांगद को हस्तिनापुर की गद्दी मिली ।

प्रश्न-8 बाद में हस्तिनापुर की गद्दी विचित्रवीर्य को क्यों दी गई?

उत्तर - चित्रांगद की अकाल मृत्यु के बाद उनके भाई विचित्रवीर्य को हस्तिनापुर की गद्दी दी गई ।

प्रश्न-9 विचित्रवीर्य के दो पुत्रों के नाम लिखो ।

उत्तर - विचित्रवीर्य के दो पुत्रों के नाम हैं - धृतराष्ट्र और पांडु ।

प्रश्न-10 धृतराष्ट्र ज्येष्ठ पुत्र थे फिर पांडु को गद्दी पर क्यों बिठाया गया?

उत्तर - धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे इसलिए उस समय की निति के अनुसार पांडु को गद्दी पर बिठाया गया ।

प्रश्न-11 किसने राजा शांतनु को अपने सौंदर्य और नवयौवन से मोह लिया?

उत्तर- गंगा ने राजा शांतनु को अपने सौंदर्य और नवयौवन से मोह लिया ।

प्रश्न-12 पैदा होते ही गंगा अपने पुत्रों से साथ क्या किया करती थी?

उत्तर- पैदा होते ही गंगा अपने पुत्रों को नदी की बहती हुई धारा में फेंक दिया करती थी ।

पाठ -3 हिमालय की बेटियाँ

(लेखक - नागार्जुन)

➢ हिमालय की बेटियां का सारांश

लेखक जब दूर से हिमालय को गोदी से निकलती नदियों की देखता था तो वे उसे अति सुदर प्रतीत होती थीं। उनका स्वरूप एकदम गंभीर, शात और अपने आप में मस्त दिखाई देता था। वे शिष्ट महिला की भाँति दिखती थी। लेखक के मन में उनके प्रति बहुत आदर और श्रद्धा का भाव था। जब वह उनमें डुबकियाँ लगाता है. तो ऐसा प्रतीत होता जैसे-माँ, दादी, मौसी या मामी की गोद में खेल रहा हो अर्थात् नदियों के साथ लेखक को आत्मीय भावना जुड़ गई थी। कई वर्षों तक लेखक नदियों को काफी दूर से देखता रहा, लेकिन एक बार वह हिमालय की काफी चढाई चढ़ा, तो उसे नदियों का बदला हुआ आकर्षक रूप देखने का अवसर प्राप्त हुआ। लेखक को यह समझ नहीं आता कि निरंतर, शांत स्वरूप में आगे बढ़ती नदियों का लक्ष्य क्या है? ये किससे मिलने की चाह में आगे की ओर बढ़ती जा रही हैं? अपार प्रेम करने वाले पिता हिमालय को छोड़कर ये किसका प्रेम पाना चाहती हैं? जिस प्रकार बेटियाँ ससुराल जाने के समय मायके की हर चीज़ जिसे वे प्रेम करती हैं, खुशी-खुशी छोड़ जाती हैं, उसी प्रकार ये हिमालय की बेटियाँ भी बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ, पौधों से भरपूर घाटियाँ, गहरी गुफाएं, हरी-भरी घाटियाँ सब कुछ छोड़कर समुद्र की ओर बढ़ जाती हैं कुछ आगे बढ़कर देवदार, चीड़,चिनार, सफ़ेदा, कैल के जंगलों में जाकर उन्हें अवश्य अपने बचपन की याद आती होगी। काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता का रूप दिया क्योंकि ये सर्वस्व कल्याण ही करती हैं।

➢ नए शब्द

1) संभ्रांत
2) विस्मय
3) लक्ष्य
4) अतृप्त
5) निकेतन
6) विरही
7) सुचेतन
8) उचटना
9) मुदित

➢ शब्दार्थ

1) सभ्रांत = शिष्ट
2) भाव- भंगी = स्वरूप
3) विस्मय = आश्चर्य
4) लक्ष्य = मंजिल
5) अतृप्त = असंतुष्ट
6) सरसब्ज = हरी भरी
7) निकेतन = घर
8) विरही = बिछड़ने का दुख
9) सुचेतन = सजीव
10) मुदित = प्रसन्न

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) लेखक ने किन्हें दूर से देखा था?

(a) हिमालय पर्वत को

(b) हिमालय की चोटियों को

(c) हिमालय से निकलने वाली नदियों को

2) नदियों की बाल लीला कहाँ देखी जा सकती है?

(a) घाटियों में (b) नंगी पहाड़ियों पर

(c) उपत्यकाओं में **(d) उपर्युक्त सभी**

3) निम्नलिखित में से किस नदी का नाम पाठ में नहीं आया है?

(a) रांची (b) सतलुज

(c) गोदावरी (d) कोसी

4) बेतवा नदी को किसकी प्रेयसी के रूप चित्रित किया गया है? |

(a) यक्ष की (b) कालिदास की

(c) मेघदूत की (d) हिमालय की

5) लेखक को नदियाँ कहाँ अठखेलियाँ करती हुई दिखाई पड़ती हैं?

(a) हिमालय के मैदानी इलाकों में

(b) हिमालय की गोद में

(c) सागर की गोद में

(d) घाटियों की गोद में

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 लेखक ने किसको ससुर और किसको दामाद कहा है?

उत्तर- लेखक ने हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहा है।

प्रश्न-2 नदियों का उल्लास कहाँ जाकर गायब हो जाता है?

उत्तर- नदियों का उल्लास मैदान में जाकर गायब हो जाता है।

प्रश्न-3 नदियां कहाँ उछलती, कूदती और हँसती दिखाई पड़ती हैं?

उत्तर - नदियां हिमालय की गोद में उछलती, कूदती और हँसती दिखाई पड़ती हैं।

प्रश्न-4 हिमालय की बेटियाँ पाठ के लेखक कौन हैं?

उत्तर - हिमालय की बेटियाँ पाठ के लेखक नागार्जुन हैं।

प्रश्न-5 इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा गया है?

उत्तर - इस पाठ में हिमालय की बेटियाँ नदियों को कहा गया है।

प्रश्न-6 नदी का गंभीर और शांत रूप किस भाँति प्रतीत होता है?

उत्तर - नदी का गंभीर और शांत रूप संभ्रांत महिला की भाँति प्रतीत होता है।

प्रश्न-7 लेखक ने नदियों का कुछ और रूप कब देखा?

उत्तर - जब लेखक हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो उसने नदियों का कुछ और रूप ही देखा।

प्रश्न-8 हिमालय पर नदियों का रूप और स्वभाव कैसा होता है?

उत्तर - हिमालय पर नदियाँ दुबली पतली होती हैं और इनके स्वभाव में चंचलता होती है।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 पर्वतराज हिमालय को सौभाग्यशाली क्यों कहा गया है?

उत्तर - दोनों महानादियाँ सिंधु और ब्रह्मपुत्र समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। समुद्र को पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला इसलिए इसे सौभाग्यशाली कहा गया है।

प्रश्न-2 लेखक के मन में नदियों को बहन का स्थान देने की भावना कब उत्पन्न हुई?

उत्तर - एक दिन लेखक का मन उचट गया था, तबीयत ढीली थी। वह सतलज के किनारे जाकर बैठ गया और अपने पैर पानी में लटका दिए। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने कवी पर असर डाला। उनका तन और मन ताज़ा हो गया और उन्होंने नदियों को बहन मान कर एक कविता रच दी और उसे गुनगुनाने लगे।

प्रश्न-3 लेखक ने किन-किन नदियों का ज़िक्र इस पाठ में किया है और उनके अस्तित्व के विषय में क्या कहा है?

उत्तर - लेखक ने सिंधु, ब्रह्मपुत्र, रावी, सतलुज, व्यास, चनाब, झेलम, काबुल, कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि नदियों का ज़िक्र इस पाठ में किया है। लेखक कहता है कि वास्तव में ये नदियाँ दयालु हिमालय के पिघले हुए बरफ़ की एक-एक बूँद से इकठ्ठा हो-होकर बनी हैं और अंत में समुद्र की ओर प्रवाहित होती हैं।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर - सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास, चनाब, झेलम, काबुल, कुभा, कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी नदियों के नाम याद आ जाते हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति हिमालय के पिघले हुए जमी बर्फ़ के जल से हुई है। समुद्र भी स्वंय को सौभाग्यशाली मानता है कि उसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला है।

प्रश्न-2 काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?

उत्तर - नदियाँ हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। नदियों के किनारे पर प्राचीन काल में कई सभ्यताओं का विकास हुआ। नदियाँ पर्यावरण और प्रकृति को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक होती हैं। इनके जल से फ़सल सींचे जाते हैं। आधुनिक युग में नदी के जल को रोक कर बाँधों का निर्माण

किया गया है जो जल की आवश्यकता पूर्ती के साथ-साथ विद्युत् ऊर्जा की आवश्यकता को भी पूर्ण करती है। नदियों की इस महत्ता के कारण ही काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

➢ व्याकरण

* उपसर्ग-

उपसर्ग में हम किसी मूल शब्द के आगे शब्दांश जोड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं । उपसर्ग शब्द का निर्माण उप और सर्ग के मिलने से हुआ है ।उप का अर्थ जहां आगे होता है वही सर्ग का मतलब होता है, जोड़ना इस प्रकार उपसर्ग की सबसे अर्थवान परिभाषा हुई," उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी शब्द के आगे लगकर नए नए शब्दों का निर्माण करता है।"

अति -अतिरिक्त, अतिशय, अतिशयोक्ति
अनु - अनुभव, अनुसार,अनुचर, अनुग्रह
निस् - निस्वार्थ, निष्कर्ष निष्पक्ष
परि - परिस्थिति, परिवार, परिहास
हम - हमसफ़र, हमशक्ल, हमदर्द
हर - हरअजीज , हरवक्त, हरदम
ख़ुश -ख़ुशफहमी, ख़ुशदिल, ख़ुशमिजाज
ला - लानत, लाचार, लाइलाज

* प्रत्यय-

प्रति और अवयव के मिलने से बना शब्द प्रत्यय- कहलाता है। वह शब्दांश जो किसी शब्द के पीछे लग कर एक नए शब्द का निर्माण करता है प्रत्यय कहलाता है। जैसे पूजा में पा लगता है तो पुजापा बन जाता है।

आवट - मिलावट,लिखावट,बसावट, बनावट
आहट - फुसफुसाहट,मरमराहट, घबराहट। छटपटाहट
आया - बनाया, सुनाया, बहलाया, खिलाया
आक - छपाक,तपाक,चटाक, मजाक
आऊ - लडाऊ,गिराऊ,बुझाऊ,घुमाऊ
इमा - गरिमा, लघिमा
नाक - खतरनाक, दर्दनाक
दान - दीपदान, अंगदान, पिंडदान
कार - कलाकार चित्रकार पत्रकार, कुंभकार

लेखन -विभाग

- **अनुच्छेद**
- **त्योहारों का महत्त्व**

संकेत बिंदु-.

- विभिन्न क्षेत्रों के अपने-अपने त्योहार
- विभिन्न प्रकार के त्योहार
- त्योहारों का महत्त्व
- त्योहारों के स्वरूप में परिवर्तन

भारत त्योहारों एवं पर्यों का देश है। शायद ही कोई महीना या ऋतु हो, जब कोई-न-कोई त्योहार न मनाया जाता हो। भारत एक विशाल देश है। यहाँ की विविधता के कारण ही विविध प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। यहाँ परंपरा और मान्यता के अनुसार नागपंचमी, रक्षाबंधन, दीपावली, दशहरा, होली, ईद, पोंगल, गरबा, वसंत पंचमी, बैसाखी आदि त्योहार मनाए जाते हैं। इसके अलावा कुछ त्योहारों को सारा देश मिलकर एक साथ मनाता है। ऐसे त्योहारों को राष्ट्रीय पर्व कहा जाता है। इन पर्यों में स्वतंत्रता दिवस, . गणतंत्र दिवस तथा गांधी जयंती प्रमुख हैं। ये त्योहार हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ये त्योहार जहाँ भाई-चारा, प्रेमसद्भाव तथा सांप्रदायिक सौहार्द्र बढ़ाते हैं, वहीं राष्ट्रीय एकता, देशप्रेम और देशभक्ति की भावना को भी प्रगाढ़ करते हैं। इनसे हमारी सांस्कृतिक गरिमा सुरक्षित रहती है। वर्तमान में इन त्योहारों के स्वरूप में पर्याप्त बदलाव आ गया है। रक्षाबंधन के पवित्र अभिमंत्रित धागों का स्थान बाज़ारू राखी ने, मिट्टी के दीपों की जगह बिजली के बल्बों ने तथा होली के प्रेम और प्यार भरे रंगों की जगह कीचड़, कालिख और पेंट ने ले लिया है। आज इन त्योहारों को सादगी एवं पवित्रता से मनाने की आवश्यकता है।

* गतिविधि - हिमालय का चित्र बनाए |

कविता-4 कठपुतली

(कवि - भवानी प्रसाद मिश्र)

- **कठपुतली कविता का सारांश**- कठपुतली कविता में कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने कठपुतलियों के मन की व्यथा को दर्शाया है। ये सभी धागों में बंधे-बंधे परेशान हो चुकी हैं और इन्हें दूसरों के इशारों पर नाचने में दुख होता है। इस दुख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली विद्रोह के शुरुआत करती है, वो सब धागे तोड़कर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। अन्य सभी कठपुतलियां भी उसकी बातों से सहमत हो जाती हैं और स्वतंत्र होने की चाह व्यक्त करती हैं। मगर, जब पहली कठपुतली पर सभी की स्वतंत्रता की ज़िम्मेदारी आती है, तो वो सोच में पड़ जाती है।

- **नए शब्द**

1) क्रोधित
2) कठपुतली
3) उत्कृष्ट

- **शब्दार्थ**

1) गुस्से से उबली - बहुत क्रोधित हुई
2) पाव पर छोड़ देना - आत्मनिर्भर होने देना
3) स्वतन्त्रता - आजाद

4) इच्छा - कामना

5) छंद - पुकार

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) कठपुतली कविता के रचयिता हैं

(a) मैथलीशरण गुप्त **(b) भवानी प्रसाद मिश्र**

(c) सुमित्रानंदन पंत (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

2) कठपुतली को किस बात का दुख था?

(a) हरदम हँसने का **(b) दूसरों के इशारे पर नाचने का**

(c) हरदम खेलने का (d) हरदम धागा खींचने का

3) कठपुतली के मन में कौन-सी इच्छा जागी?

(a) मस्ती करने की (b) खेलने की

(c) आज़ाद होने की (d) नाचने की

4) पहली कठपुतली ने दूसरी कठपुतली से क्या कहा?

(a) स्वतंत्र होने के लिए (b) अपने पैरों पर खड़े होने के लिए

(c) बंधन से मुक्त होने के लिए **(d) उपर्युक्त सभी**

5) कठपुतलियों को किनसे परेशानी थी?

(a) गुस्से से (b) पाँवों से

(c) धागों से (d) उपर्युक्त सभी से

6) कठपुतली ने अपनी इच्छा प्रकट की

(a) हर्षपूर्वक (b) विनम्रतापूर्वक

(c) क्रोधपूर्वक (d) व्यथापूर्वक

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'कठपुतली' कविता के रचयिता कौन हैं?

उत्तर- 'कठपुतली' कविता के रचयिता भवानीप्रसाद मिश्र हैं।

प्रश्न-2 कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर- कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वह धागे में बँधी हुई पराधीन महसूस करती है और उसे दूसरों के इशारे पर नाचने से दुःख होता है। वह स्वतंत्र होना चाहती है।

प्रश्न-3 कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

उत्तर- कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह नहीं खड़ी होती क्योंकि वह धागों से बंधी होती है और दूसरों के आधीन होती है। उसमें स्वतंत्र

रूप से अपने पैरो पर खड़े होने की क्षमता नहीं होती।

प्रश्न-4 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?

उत्तर पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को इसलिए अच्छी लगी क्योंकि स्वंत्रता सभी को अच्छी लगती है। सभी कठपुतलियाँ पराधीनता से मुक्त हो कर स्वतंत्र होना चाहती थीं। किसी भी कठपुतली को धागे में बंध कर रहना और दूसरों के इशारे पर नाचना पसंद नहीं था।

व्याकरण

काल

काल का अर्थ होता है - "समय" । अर्थात क्रिया के होने या घटने के समय को काल कहते है।

दूसरे शब्दों में –-काल क्रिया के उस रूप को कहते है जिससे उसके कार्य करने या होने के समय तथा पूर्णता का ज्ञान होता है। उसे काल कहते है।

क्रिया के होने के समय की सूचना हमें काल से मिलती है। जैसे –

- नीलम बीमार है।
- नीलम बीमार थी ।
- नीलम अस्पताल जाएगी।

काल के भेद-

1. वर्तमान काल (present Tense) - जो समय चल रहा है।
2. भूतकाल(Past Tense) - जो समय बीत चुका है।
3. भविष्यत काल (Future Tense)- जो समय आने वाला है।

1) वर्तमान काल- कोई क्रिया जिस समय घटित होती है, भाषा में वह समय वर्तमान काल कहलाता है।

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में चल रहे समय का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

उदहारण

- मेरी बहन डॉक्टर है।
- वह रोज अस्पताल जाती है।
- पिताजी सुबह मंदिर जाते है।
- मॉ इस समय नाश्ता बना रही है।
- बच्चे स्कूल गए है।

2) भूतकाल :- जिसके द्वारा हमें क्रिया के बीते हुए समय में होने का बोध होता है। उसे भूतकाल कहा जाता है।

भूतकाल दो शब्दों के मेल से बना है - "भूत + काल। भूत का अर्थ होता है - "
जो बीत गया और काल का अर्थ होता है - समय।"

- आज हमारा स्कूल बंद था
- हवा बहुत तेज चल रही थी
- वह खा चुका था।
- मैंने पुस्तक पढ़ ली थी।
- वे दोनों मेरे पडोसियों के बच्चे थें।

3) भविष्य काल- जिन चिह्नों से यह पता चलता है कि क्रिया आने वाले समय में घटित होने वाली है, वे चिह्न भविष्यत काल के चिह्न कहलाते हैं |

दूसरे शब्दों में –जिसके द्वारा हमें क्रिया के आने वाले समय में कार्य होने का बोध हो उसे भविष्यत काल कहते है।

- राम कल पढ़ेगा।
- इस साल बारिश अच्छी होगी
- वह मेरी बात नहीं मानेगी।
- आज बाजार बंद रहेगा
- कमला गाएगी

लेखन विभाग

➢ छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
केंद्रीय विद्यालय
कालिंदी विहार, नई दिल्ली।
विषय - छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना पत्र
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा सातवीं 'ए' की छात्रा हूँ। मेरे पिता जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वे विद्यालय के शुल्क तथा अन्य खर्चे का भार उठा पाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी पिछली कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करती रही हूँ तथा खेल-कूद व अन्य प्रतियोगिताओं में भी मैंने अनेक पदक प्राप्त किए हैं।
अतः आप से अनुरोध है कि मुझे विद्यालय के छात्रवृत्ति कोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने का कष्ट करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या,
नेहा तिवारी

कक्षा-सातवीं

दिनांक.......

➢ **गतिविधि - कठपुतली का चित्र बनाए |**

>>>